सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, सितम्बर-अक्टूबर, 2017

तेरा राज्य युगानुयुग है

तेरा राज्य युगानुयुग है; और तेरी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है। (भजन संहिता 145:13)

तेरा राज्य युग-युग का है; और तेरी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है। मसीही जीवन जब सम्पूर्ण रूप से विकसित हो जाता है, तब परमेश्वर को हर समय स्तुति करते रहने की स्थिति में पहुँच जाता है। तब वह अपने मन में महसूस करता है कि यह एक युगानुयुग रहने वाला राज्य है। वह आजादी को अपने दिल से महसूस करता है। उसके ऊपर कोई पाप शासन नहीं करता। वह परमेश्वर में बहुत सुरक्षित महसूस करता है। उसे एहसास होता है कि वह अनन्तकालीन सिद्धांतों का पालन कर रहा है इससे जो सुरक्षा उसे चाहिए, उसे मिलती है। 'हे यहोवा के भक्तों, उसका भजन गाओ, और उसके, पवित्र नाम का धन्यवाद करों।' (भजन संहिता 30:4)

होशे (7:14) 'वे मन से मुझे नहीं पुकारते पर अपने बिछौने पर विलाप करते रहते हैं। अन्न और दाखरस के लिए तो वे भीड़ लगाते हैं पर मुझ से मुंह मोड़ते

तेरा राज्य... पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर ***रविवारसुबह 7:30 से 8:00*** *बजे*

निराशा के बीच आशा

'हे आशा रखने वाले बन्दियों, गढ़ में लौट आओ, मैं आज ही घोषित करता हूँ कि मैं तुम्हें बदले में दो गुणा लौटा दूँगा।' जकर्याह (9:12)

इन दिनों हम लोग निराशा और अंधकार के दौर से गुजर रहे हैं। अखबार ऐसे दुखद सामाचारों से भरा है जो हमें बहुत वेदना और पीड़ा पहुँचाते है। हाल ही में घटी प्राकृतिक विपदाएं हजारों को अपने साथ मृत्यु की ओर ले गयीं। और जो बचे है उनमें जीने की आस न बची। उनकी आँखों के सामने ही उनके अपने प्रिय लोग नाश हो गये हैं।

हाँ, इन दिनों में सचमुच बहुत से देशों में लोगों पर भयंकर उदासी छायी हुई है। फिर भी इन सभी के मध्य, जब आप यीशु को अपना मुक्तिदाता, प्रभु और मित्र मानते हैं, तब एक बंधन मुक्त आशा का कार्य आपके विचारों और क्रियाओं में होता है।

इस प्रकार हम पवित्र बाइबल में एक विचित्र और चौंकाने वाला कथन पाते हैं - 'आशा के बन्दियों।' एक बंदीगृह हमें आशा की प्रेरणा कम ही देता है। लेकिन यहां एक अलग तरह की जेल है। जहां आप आशा से बंधे हैं और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से घेरे हुए हैं।

हरेक व्यक्ति के जीवन में अनुशासन और सुधरने (परिष्कृत होने) का समय आना चाहिये। परन्तु हर समय हमें याद रहे कि महान बातों के लिए तैयार किये जाने का यही समय है। आप कुछ समय नियंत्रण में बंधे हैं ताकि महान आशिषों के उत्तराधिकारी बन सकें।

परमेश्वर के कार्य के लिए महान आशायें और योजनायें ऐसे ही हम पर नहीं बरसतीं। एक स्वार्थी स्वभाव की व्यक्तिगत अभिलाषा और प्रसिद्धी या पैसे की लालसा हमारे स्वाभाविक दिमाग से जन्म लेता है। सो बहुत से लोग अपने जीवन का अधिकांश भाग छाया का पीछा करने में लगा देते हैं। अंत में वे कड़वे, चिड़चिड़े और असंतुष्ट हो जाते है। जीवन और जवानी चली जाती है और बुढ़ापे की असमर्थतायें उनकी महत्वपूर्ण उपयोगिता को सीमित कर देती है। परन्तु पाप के लिए सच्चा पश्चाताप और उद्धारकर्ता की ओर यथार्थ रूप से मुड़ना नये क्षितिज को खोलता है। उस तरह ही बातों की कल्पना कोई व्यक्ति मुश्किल से ही कर सकता है।

जॉन बनियन जिन्होंने अंग्रेजी साहित्य में स्थायी जगह पायी है, वे 'मसीही मुसाफिर' (पिलग्रिम्स प्रोग्रेस) के लेखक थे। उन्हें एक बार गहरा आघात पहुँचा, जब बेडफोर्ड में एक सबसे घृणित चरित्र वाले व्यक्ति ने अचानक उन्हें देखा और उनकी गंदी भाषा के लिए उन्हें डाँटा। जॉन बनियन के लिए यह एक बड़े अचंभे की बात थी कि एक ऐसा जन जो दुष्ट समझा जाता था, वह उनसे अच्छा था। जॉन बनियन बहुत गरीब थे, एक ठठेरे का व्यवसाय (बर्त्तनों की मरम्मत) करके मुश्किल से अपना गुजरा करते थे। हालांकि वे अनपढ़ थे पर जब वे परिवर्त्तित हुए, उनका जीवन एक महान कार्य के लिए प्रक्षेपित किया गया।

उस समय की सरकार द्वारा गैर कानूनी करार की गई सभा में प्रचार करने के कारण उन्हें बारह साल बेडफोर्ड जेल में

बिताने पड़े, जो उनके हित में भला ही था। उन दिनों ब्रिटिश सरकार इन सभाओं को गुप्त धर्म संघ कहा करती थी। जो पुस्तक उन्होंने जेल में लिखी उसे इतिहास में जगह मिली। बाइबल के बाद, ये पुस्तक सब से अधिक बिकी है। उनकी स्थानीय अंग्रेजी भाषा एक कलाकृति की तरह स्पष्ट और प्रभावशाली थी। उनके जेलर ने भी उन्हें बेझिझक अन्दर-बाहर जाने की छूट दे रखी थी। इसलिए बंदीगृह उनके लिए बंदीगृह जैसा नहीं था। उनके हृदय परिवर्त्तन के बाद उनके जीवन की प्रसिद्ध बहुत जगहों में फैल गयी थी।

परमेश्वर कहते हैं, 'हे आशा रखने वाले बन्दियों, जो तुम्हारे पास पहले था मैं तुम्हें उसके बदले दो गुणा लौटा दूंगा।' एक दिमाग जो पहले से ही भौतिक वस्तुओं की अभिलाषा से भरा है वह एक बीमार दिमाग है। आप आसानी से अपने बैंक के खाता पर 24 घंटे विचार करते रहकर बीमार पड़ सकते हैं। परन्तु परमेश्वर हमारी मदद करें कि हम विश्वास का धन और प्रेम का अक्षय धन बहुत सी पीढ़ियों के लिए जमा कर सकें।

जब हम परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं तो वह हमारे खेतों की उपज को और हमारी मेहनत को आशीष देते है। यह बहुत दुखद बात है कि हजारों किसानों कि मेहनत की उपज नष्ट हो गई है। उनके बोने का बीज भी नष्ट हो गया है। काश वे दुगना देने वाले परमेश्वर की तरफ मुडते जो उनको अपने लहू में धो कर शुद्ध करके स्वर्ग में प्रवेश करने की निश्चित आशा उनको देते। 'मेरी आशा तुम हो!' भजनकार पुकार उठते है। अब हमें अपनी आशओं का भंडार और अपनी स्थिति को परमेश्वर के सामने रखना होगा। हमारे जीवन की आशाएं और अपेक्षाएं क्या हैं? कई लोगों को इतना पीटा गया कि उनमें आशायें और अपेक्षायें मिट गयीं। उनमें केवल भय और चिन्ताए हैं। लगातार असफलता का भय, हानि और मृत्यु उनके पीछे पड़ा है।

जब जीवित परमेश्वर पर हमारी आशा रहती है, तब बिल्कुल इसकी संभावना होती है की विश्वास हमारे हृदयों में बढ़े। हमारी आशा हममें परमेश्वर के ज्ञान को बढ़ाता जाएगा। यह सोचना बिल्कुल आश्चर्य़जनक है कि हमारी आशा हमारे महान परमेश्वर जैसी विशाल हो सकती हैं। एक सकारात्मक ढांचे का मन तब हम पर शासन करना आरम्भ कर देता है। नयी आशाएं हमारी आत्माओं में उमड़ने लगती हैं। इस प्रकार की स्थिति पहले कभी नहीं हुई थी। हमारे अन्दर दृढ़ निश्चय होना चाहिये कि हम लाखों लोगों को प्रभु के पास ला सकेंगे।

हम परिस्थिति पर अधिक ध्यान देते हैं परमेश्वर पर नहीं, जो पलक झपकते ही मेज उलट सकते हैं और जहां कोई आशा नहीं होती, पूरी रीति से परिस्थिति बदल सकते है। राजनीतिक विवरणकार की राय और पत्रकार के समाचार के वजन से ज्यादा उस व्यक्ति का वजन है जिसके पास परमेशवर का वचन है। परमेश्वर का वचन हमें आशावादी बनाता है। एक पत्रकार एक स्टार्क को रंगता है और विस्मयकारी चित्र बनाता है। 'यहां थोड़ी आशा है,' वह कहता है, 'इसे सरलता से लें इसलिए के हमारा सबसे भयंकर भय भी हम पर जल्दी आ पड़ेगा।' क्या यही रूखा और आनंद हीन भविष्यवाणी, प्रेस से निकलती है! पर वह व्यक्ति जो यीशु को प्रभु मानता है अंधकार से भरी वादियों कि गहराई में पुकार सकता है, 'क्योंकि तू ही मेरी आशा है, हे प्रभु यहोवा, बचपन से मेरा आधार तू ही है।' (भजन संहिता 71:5)

मृत्यु में भी यीशु मसीह हमें आशा देते हैं। यहां एक परिवर्त्तित व्यक्ति अपने बच्चों को बता सकता है जब मृत्यु की ठंडी बाहें उसकी आवाज को कमजोर बना देती है। 'बच्चों निश्चय प्रभु यीशु की ओर फिरो, अपने पापों से पश्चाताप करो और मुझसे स्वर्ग में मिलो।' इस प्रकार परिवर्त्तित व्यक्ति की मृत्यु में भी आशा एक ऊंची उड़ान लेती है।

एक संध्या के समय, मैं एक पहाड़ी पर प्रार्थना करने गया, जहां से यूरोप का एक साम्यवादी शहर, बड़े आवासीय उपनगर की तरह दिख रहा था। जैसे मैंने प्रार्थना की और शहर की रोशनी को देखा, अचानक मेरे मन पर गहरा बोझ आया कि वहां शहर के अस्पताल में कितने मरते हुए मरीज होंगे जिन्हें यीशु मसीह के बारे नहीं बताया गया होगा। क्योंकि नास्तिक सत्ता इस प्रकार के क्रिया कलाप की अनुमति नहीं देती है। यह सोच कर मैं पूरा पिघल गया कि यहां के मरीज अनन्तता की खतरनाक स्थिति के निकट पहुंचे हैं, उन्हें यीशु मसीह से मिलने वाले उत्कृष्ट आराम और आशा से दूर रखा गया है। नागरिकों के चेहरे क्लांत, थके हुए और कठोर दिखाई देते हैं। उनमें से आशा निकल जाती है। उनके रुखे मुस्कुराहट हीन चेहरे देखने पर मन को तकलीफ होती हैं। 'बिना आशा के ये बंदी हैं।' एक दुखी व्यक्ति ने मुझ से कहा, 'मुझे इस देश से बाहर, पश्चिम भाग में जाने कि इजाजत शायद तभी मिलेगी जब मेरी मां का देहांत होगा। उनकी अंत्येष्टि में जाने की भी शायद मुझे मंजूरी ना मिले। उनको देखे मुझे कई साल हो गये है। 'कोई आशा नहीं है!' यह कितना कुचलने वाला भारी वजन है।

बाइबल इब्राहीम के विषय में बताता है कि 'एक वह जिसका निराशा के विरुद्ध आशा में विश्वास था।' जब उसने परमेश्वर पर विश्वास किया, कितनी बड़ी विजय को उसने देखा! हमारी आशा क्या है? गीतकार रचने वाला तीव्र आवाज में कहता है। 'अधिक पवित्रता मुझे विजयी

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBSMarg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

होने के लिए अधिक सामर्थ्य देती है, कष्ट में अधिक सहनशक्ति, पाप के लिए अधिक दुःख, मेरे उद्धारकर्ता पर अधिक विश्वास, उनकी देखभाल के लिए अधिक संवेदना, उनकी सेवा में अधिक आनन्द, प्रार्थना में अधिक प्रयोजन, क्या आप का हृदय इस प्रकार की आत्मिक इच्छाओं से भरा हैं? यह कि यीशु मसीह की तरह रहूँगा। 'अधिक और अधिक मसीह की तरह जब तक न मैं उनको आमने सामने न देखूं।' तब ही महान चीजें आपके जीवन से आयेंगी।

आइये कोई न कहे, 'नहीं, यह असंभव है, मैं अपनी उदासी और अप्रसन्नता से बाहर नहीं निकल सकूंगा। नहीं, मैं अपने मनोभाव और घमंड का, अपनी बेलगाम जीभ और जल्दबाजी में आने वाले क्रोध का कैदी हूँ।' प्रभु यीशु मरे ताकि आप बंधन मुक्त हो और वे आपको आशा का बंदी बनायें जो दो गुणा आशिष के उत्तराधिकारी हो।

आइये वह रोशनी जो क्रूस से निकल रही है, आपको प्रचुरता से भर दे और आपकी उदासी को निकाल दे। इस आशा की तरह कोई आशा नहीं है जो एक पश्चाताप करने वाले पापी के हृदय को भर देता, जब वह उद्धारकर्ता के उन भागों को देखता है जिन से लहू बह रहा है और उन फैली हुई बांहों को देखता है। आपका अंधकार रोशनी में, आपका भारीपन गीतों में बदल जायेगा। प्रभु यीशु हमारे लिए आशा लाये हैं, जो केवल दिन के बढ़ने के साथ बढ़ता जाता है।

- जोशुआ दानिएल।

तेरा राज्य.. पृष्ठ 1 से

हैं।'

भजन संहिता (145:18) 'जो उसे पुकारते हैं अर्थात जो उसको सच्चाई से पुकारते है वह उन सब के निकट रहता है।'

परमेश्वर को हमें पूरे मन से पुकारना है। परमेश्वर के पास, हमारे लिए क्षमा हमेशा मौजूद है। जब आप, अपने आप को जांचते हो, तो देखोगे कि, आपको प्रार्थना की जरूरत है। वह दूसरों के पाप नहीं जो ज्यादा एहमियत रखते हैं। अगर परमेश्वर के साथ आप सही बनते हो, तो आप के चारों तरफ सब कुछ ठीक ठाक हो जाता है। जब आप बाईबल का पवित्र वचन पढ़ते रहते हो, अपने स्वभाव को गहराईयों में जांचते हो, दिव्य स्वभाव को अपने अन्दर आने देते हो, तब आप आजाद हो जाओगे। आप युग-युग बना रहने वाले राज्य से जुड़े हो। यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान से इस राज्य का मुकद्दर हमेशा के लिए सुस्थापित किया गया है। युसुफ एक गुलाम था मगर वह अपने मन में आजाद था। जल्दी ही वह मिस्र देश का उच्च आदमी बन गया।

परमेश्वर आपके साथ रहेंगे और आपकी हार को जीत में बदल डालेंगे। आपको यह आभास हमेशा रहे कि आप एक गिरी हुई मानव जाति से संबंधित हो। परमेश्वर का वचन आप में बना रहे। जितना आप परमेश्वर के वचन के आधीन होते हो उस हद तक उनका वचन आप में टिका रहता है। हम स्वार्थ की कैद में है। क्रूस के पास हमारे स्वार्थ को मरना होगा। तब आप आजाद हो जाओगे। तब आप जहां भी जाओ, अन्धकार की शक्तियां आप को पहचान जायेंगीं और कहेंगी ; यह एक मनुष्य है जिसके माथे पर परमेश्वर का चिह्न है! उसका हम विरोध नहीं कर पायेंगे। हो सकता है लोग आप पर हुक्म जमाएँ, मगर आप ही असली स्वामी रहोगे। परमेश्वर के सामने एक शुद्ध विवेक आपको उनमें एक भरोसे का स्थान देता है। उसे हम खो ना बैठे। यह आत्माविश्वास कोई घमंड पैदा नहीं करता। वह विनम्र है। आपकी विनम्रता में आपके मालिक का गुण झलकेगा। जब आप विनम्र हो तब आप महान हो। आप उस युग-युग के राज्य के सिद्धांतों का पालन कर रहे हो। आप अपने जीवन का निर्माण इस तरह करे कि आप कभी हारने ना पाओ। पवित्रता के सिंद्धांतों से मत भटकना। इस विषय में जरा सा भी ना हिलना। कुछ समय तक संघर्ष करना पड़ सकता है। स्वर्गीय इच्छाओं से अपना मन भर लेना। (नीतिवचन 22:17,18) "अपना कान लगाककर बुद्धिमानों के वचन सुन, और मेरे ज्ञान की बातों पर अपना मन लगा, क्यों कि यदि तू उन्हें अपने मन में बसा ले, और वे तेरे होठों से सदा निकला करें, तो यह मन भावनी बात होगी।" परमेश्वर का वचन परमेश्वर की सलाह है। वह अधिकार पूर्ण है। (नीतिवचन 30:5) 'परमेश्वर का एक-एक वचन ताया हुआ है: जो परमेश्वर की शरण लेते है उनके लिए वह ढाल है।' जब आप अविरत रूप से अपने आप को परमेश्वर के वचन से भर रहे होते तो अपने अंदर, भावनाओं के जीवन में, सांमजस्य पाओगे। सच्चा धर्म अंतरंग में तारतम्य लाता है और अपनी भावनाओं में एक सिद्ध संतुलन लाता है। अगर हार सामने हो, तब भी साहस छोड़ना नहीं। विजय का दावा करो। तब आप हासिल कर पाओगे। निसंदेह, हमारा स्वाभाव पापमय है। मगर हम उस विषय को परमेश्वर के सामने रखते हैं। अगर हम अपने अंदर और पाप देखते है तो उसे भी हम परमेश्वर के सामने लाते हैं। जब आप परमेश्वर की धार्मिकता हासिल करते हो तो आप आजाद महसूस करोगे। जब स्वाभाविक रूप से वो पवित्रता जीवन में बहती है, यहाँ तक कि अपने आंखों के जरिये, तो सुन्दर स्वतंत्रता का आनंद उठाओगे। जब आपकी जुबान पर पवित्र आत्मा की लगाम हो, तब अद्भुत बातें ही आपके मुंह से निकलेंगीं।

- एन. दानिय्येल।

मैं चंगा करने वाला परमेश्वर हूँ

स्वर्गीय पिता के प्रति गहरी कृतज्ञता के साथ निम्न लिखित गवाही को लिखा गया है। पुनः स्वास्थ्य पाने की यह गवाही है। एलीस क्लागहॉर्न ने कई महीनों से, कोशिकाओं की एक बड़ी गांठ के कारण बहुत पीड़ा उठाई। और अचानक 26 जनवरी 1886 के दिन, वह पूर्णतः स्वस्थ हो गई।

जनवरी में उस दिन श्रीमती क्लागहॉर्न को बहुत तेज दर्द होने लगा और वही भयानक पेशी ऐंठन दुबारा आने लगी।

'जब मैं ऐसा दर्द सहन कर रही थी,' उन्होंने बाद में लिखा, 'मेरे पति ने कुछ विश्वास और चंगाई' पर पर्चा मिलने पर, उनमें से एक पढ़ना शुरू किया। मुझे तो शुरुआत में बिलकुल उसमें दिलचस्पी ना थी, क्योंकि इनके विषय में मुझे कुछ

भी मालूम ना था, कुछ मामलों के बारे में तो मैंने सुना था। मगर वे सब बहुत दूर की बातें है। मेरी समझ के बाहर सोचकर मैंने उस बात को एक तरफ कर दिया। और अधिक सोचने के लिए मैं बहुत बीमार थी। मगर मैं देख पा रही थी कि वे काल्पनिक घटनायें नहीं हैं। और मैं सोचने लगी कि क्या परमेश्वर सचमुच ऐसे कार्य करेंगे?

'और मैं सोचने लगी क्या यह संभव है कि प्रभु के पास मेरे लिए चंगाई है। बीमारी के दौरान, मैंने कभी भी उनसे स्वास्थ्य की मांग नहीं की है। मगर अब ऐसा लग रहा था कि ऐसी विनती करने के लिए मुझे प्रेरित किया जा रहा है: 'प्रभु, अगर आप के पास मेरे लिए यह चंगाई है, अभी मुझे चंगा करो।' और तुरन्त एक आवाज ने कहाः 'यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।' और बारंबार रोमांचित, उस सनसनी भरे शब्दों का वर्णन करना असंभव है। मैं सोच ही रही थी, और वही आज्ञा दुबारा उन्हीं शब्दों को दोहराते सुनाई दी। मगर मैंने कोई ताकत मुझमें भरते महसूस नहीं की और वही भयानक पीड़ा अब भी उपस्थित थी। इसलिए मैंने जोर से कहाः 'मगर प्रभु मुझ में ताकत नहीं है। प्रभु, मुझे वह शक्ति दो, और मैं उठ जाऊँगी;'

और दुबारा वही आवाज ने कहाः 'यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर!' तब मैं ने उठने की कोशिश की; मैंने तो केवल मानसिक प्रयास ही किया, मगर एक हल्के पंख की तरह मैं अपने पैरों पर खड़ी हो गयी। कई महीनों के बाद पहली दफा उसी पल सारा दर्द गायब हो गया .. और मैं कहने लगीः 'हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर।' और उसी तरह मैं प्रार्थना करती रही। और तब मैं बिस्तर के एक बगल में बैठ गई, और सिर के ऊपर हाथ उठाते, लकवे के मारे शरीर के भाग को भी हिला पाई।

अंडे के माप का एक फोड़ा ठीक हो गया और मेरे शरीर के अन्दर मानो सब कुछ स्थान बदल रहा हो, और वही अवर्णनीय सनसनी पूरा शरीर में मैं महसूस कर रही थी, जैसे सबकुछ नया हो रहा हो।

'फिर मैं उठ गयी और कुछ कदम चलकर पीछे मुडकर मेरे बिस्तर और बगल में दवाइयों को देख, मैं फिर फर्श पर गिरने लगी। मगर मैंने और शक्ति मांगी और प्राप्त की। मगर जब मैं नर्स को बुलाने वाली थी, मुझे मन में आभास हुआ, (एक सुनाई देने वाला आवाज नहीं था।) 'यह काफी है; तुमने परमेश्वर का सामर्थ्य को देखा है, अब अपने बिस्तर पर लौट जाओ;' और मैं ने वैसा ही किया।

'बिस्तर पर लौट जाने के बाद, मैं ने अपने आपको पुनः परमेश्वर को समर्पित किया और विनती की कि उनकी इच्छा मुझ में पूरी करे; अगर पीड़ा सहते वह मेरा अच्छा उपयोग करेंगे तो वैसा ही सही, मगर सिर्फ यही कि मुझ में वह महिमा पाये; और मुझे आश्वासन मिल गया कि वैसा ही होगा। उसके बाद नर्स मेरे लिए खाना लाई .. मेरा पेट जो इससे पहले कुछ भी सहन नहीं कर पाता अब आसानी से पचा पाया।

'(मेरे पति) उनकी गैरहाजरी में, परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया, यह सुनकर उनके अचम्भा और आनन्द को बताने की कोशिश करने की जरूरत ही नहीं है.. जब उन्होंने धन्यवाद आदा किया, मैंने उनको डॉक्टर साहब को बुला लाने की विनती की।

श्रीमती क्लागहॉर्न के कमरा में प्रवेश करते ही डॉक्टर का पहला शब्द यही थाः 'परमेश्वर की महिमा हो।' अपने आश्चर्यजनक कार्य के लिए, उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद अदा किया, और आगे दवाई लेने से मना किया। उस रात उठकर उसने प्रार्थना करने के लिए घुटने टेके। उस रात और तब से वह एक नन्ही बच्ची की तरह सोई। तरोताजा करती ऐसी नींद का इससे पहले उन्होंने कभी अनुभव नहीं किया था।

आगे के दिनों में श्रीमती क्लागहॉर्न प्रार्थना सभाओं में हाजिर हो पाई। और प्रभु ने उसके लिए जो महान कार्य किया है लोगों से बांट पाई। 'धीरे धीरे मेरी ताकत लौट आई', उन्होंने लिखा, 'कई दिनों तक, पहले ताकत के लिए मांगे बगैर खड़ा रह नहीं पाती थी; और जब अगर मैं खडी हूं और मेरा ध्यान मसीह से हट जाता तो जमीन पर गिरने लगती। स्वाभाविक तौर से, बिना किसी दर्द के ही मैं ने सारे काम करने शुरू कर दिये।'

अंदरूनी सारे फोड़े गायब हो गये और सूजन भी दूर हो गई; अब वह ठीक हो गयी थी। परमेश्वर अब श्रीमती क्लागहॉन का 'चंगा करने वाला' बन गया। जब पीड़ा के गंभीर ऐंठन उठती, परमेश्वर उसको तुरन्त निकाल देते थे। दायाँ भाग, जो सिकुड़ गया था अब धीरे धीरे हाथ पैर चलाते फैलने लगा। एक समय पर, एक दिन के लिए शक्ति को वह मांगा करती और परमेश्वर उसे सारे कठिन स्थानों को पार करने में मदद करते।

'शैतान ने कई बार मुझे लुभाने की कोशिश की,' श्रीमती क्लगहॉन लिखती, 'मगर 'आत्मा के तलवार' का सामना होते ही, उसके लिए वह बहुत ज्यादा साबित होता। परमेश्वर की महीमा के लिए मैं ने यह लिखा है; और मुझे विश्वास है कि वह इसे आशीषित करेंगे।'

- ऐलीस बि. क्लागहॉन, मिशिगन होलिनेस रिकार्ड में।

सत्य का परख!

यदि तू अपने मुख से यीशु प्रभु को प्रभु जान कर अंगीकार करे, और अपने मन में यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया तो तू उद्धार पाएगा। (रोमियों 10:9)

मोसुल का नया भरती, एक ISIS का सैनिक

4 जलाई, 2014, ISIS के एक नेता का भाषण सुनने के लिए, मोसुल की महान मस्जिद में भीड़ इकट्ठा हुई थी। उस भीड़ में शामिल एक इराकी नौजवान,मीडो था। ISIS एक कट्टरपंथी इस्लामी आंतकवादी समूह है जो मध्य पूर्वी भाग में हक जमाना चाहता है।

लगभग तीन हफ्ते पहले, इस्लामवादी राज्य कहलाने वालों ने मोसुल पर कब्जा कर लिया था। अब वो शहर पहचान में नहीं आता था। विद्यार्थियों को ISIS सेना में भर्ती होने का आदेश था। लड़कियों को ISIS सैनिकों से "शादी" करने को मजबूर किया जा रहा था। दर्जनों गिरिजाघरों को आग लगा कर ध्वंस किया गया। वो इस्लाम जो ISIS सिद्धांतो को मान्यता नहीं देता, उस पर रोक लगा दी गई।

मोसुल तबाह हो गया था।

मस्जिद के अन्दर अबुबक्र अल-बग्दादी जो ISIS का नेता है, मंच पर चढ़ गया। उसकी बातें दिल दहलाने वाली और आने वाले भयानक घटनाओं की तरफ इशारा कर रहीं थीं – "अल्लाह के बैरियों" की हत्या करना।

मीडो एक ISIS सिपाही के तौर पर काम करता। एक समय उसे आशा थी को इससे इराक का हित होगा। लेकिन मोसुल पर आक्रमण के बाद उसने कुचल डालने वाली पशुता को देखा था। मस्जिद में भाषण के एक दिन बाद, ईसाइयों, याज़िदियों और अन्य मुसलमानों जो इस नए नेतृत्व के विरुद्ध थे, उनके प्रति सताव मचा। मीडो बच निकलकर फरार होने की योजना बनाने लगा।

18 जुलाई 2014, तथाकथित इस्लामी राज्य ने ऐलान किया कि ईसाइयों को सिर्फ चौबीस घंटों की मोहलत है, अपना अंतिम निर्णय लेने के लिए: धर्म बदल कर इस्लाम अपनाना, जिजा - कर अदा करना, या छोड़ना या फिर मरना। शहर भर में ISIS कर्मीदल ने ईसाइयों के घर दरवाजों पर अरबी अक्षर 'न' – (यानि नासरी) – लिख दिया था।

अगला दिन सुबह लोगों को जबरन निकालना शुरू कर दिया। 1,00,000 से भी अधिक लोग मोसुल छोड़ कर चले गये। मिडो ने अपने पहचान के एक ईसाई को फुसफसाते कहा: 'जब मुमकिन है कृपया यहां से चले जाओ। मैं आपको और आपके परिवार को कभी नहीं भूलूंगा। और मेरे लिए प्रार्थना करना' प्रार्थना के जवाब में दो साल के लड़के का छुटकारा उसने अपनी आखों से देखा था, जब एक आदमी रोती हुई मां पर चिल्ला रहा था। "क्या तुम इसी वक्त अपने बेटे को इस्लामी राज्य में शामिल होने की अनुमति देती हो या उसका सिर गोली से उड़ा दूँ?" जिहादी लोगों की वासना का शिकार, कई जवान लड़कियों को घसीटकर ले जाया गया। मीडो के पेट में गांठे बड़ती जा रहीं थी।

सूली पर गवाही:

पहले निष्कासन के बाद मीडो बाहर टहलने गया। मुख्य मार्ग पर मुड़ा और जो उसने देखा था उससे उबकाई आई। पचास गज की दूरी पर चार नौजवानों को सूली पर चढ़ाया गया। हाथ और पैरों में कील ठोक दीं थीं। दो ISIS सैनिक वहां तैनात थे।

मीडो, अत्यंत पीड़ा सहते उन ईसाई नौजवानों की मदद करना चाहता था। अजीब बात थी वह उन लोगों की तरफ खींचा चला और उनकी ओर चलने लगा। ऐसा लग रहा था कि वे कई घंटों से उस झुलसाती धूप में लटके थे।

तीस फीट की दूरी पर मीडो रूक गया और लहुलुहान उन आदमियों को देखने लगा; वे गा रहे थे और प्रार्थना कर रहें थे। 'जीदो एल-मसीह तसबे' .. यीशु मसीह की स्तुति और अधिक स्तुति करो। जब एक आदमी ने सांस लेने के लिए सिर उठाया, मीडो को देखकर वो मुस्कुराया। उसके मन में शान्ति राज कर रही थी। मगर मीडो को लग रहा था कि वह अपने आपको मार डाले।

उन क्रूसों के सामने खड़े मीडो के अंदर कुछ बदल गया। निराशा से परेशान, वह उन आदमियों को गौर से देखने लगा जिस आदमी ने उसे देखकर मुस्कराया था, उसे आखिरी सांस लेते सुनकर साहस के एक झटके उसके दिल को प्रज्वलित किया और उसे समझ आया कि वो ISIS को छोड देगा और मौका मिलते ही वह मोसुल से भाग निकलेगा। उसने कितनी शर्मिन्दगी महसूस की।

कुछ महीनों के बाद, मीडो उत्तरी भाग से फरार हो गया। एक उदार आदमी की मदद के कारण वह टर्की के इस्तानबुल पहुंच गया, जहां उसने दहला देनेवाला यादों का सामना करके सहना पड़ा। ISIS ने उसके जीवन को तबाह किया था। और रात में वह सोचता, उन ईसाईयों ने इतना सम्मान से क्यों व्यवहार किया जबकि वे सब कुछ खो रहे थे ... और उसकी आखों के सामने सूली पर लटके उन मसीहियों की तस्वीर आ जाती, जो अपने मारने वालों के लिए प्रार्थना करते, गाने गाते मुस्करा रहे है।

एक प्रकाश के रूप में गवाह:

एक हफ्ता वहां रहने के बाद, मीडो की एक साथी इराकी, समीर से मुलाकात हुई, जो उसे एक चर्च में लेकर आया। 'मैं एक मुसलमान हूं, समीर,' उसने कहा। 'ठीक है, इस जगह में भाई, कोई फर्क नहीं पड़ता। ईसाई और मुसलमान दोनों का यहां स्वागत है। 'कृपया, कम से कम दस मिनट तक रुके रहना' अन्दर कदम रखते-रखते मीडो रूक गया - और घूरकर देखने लगा। और वह रोने लगा। 'मेरे दोस्त, तुम क्यों रो रहे हो?' समीर ने पूछा। 'जो गीत ये गा रहे है मैं उस गाने को जानता हूँ। पहले मैं इस गाने को कहीं सुन चुका हूँ।' जीदो एल - मसीह तसबी, यीशु मसीह की अधिक और अधिक स्तुति करो।

उस गाने को सुनकर मीडो का दिल पिघल गया। वहां के मसीही विश्वासी भी जीवन से भरे थे, उसी गहरे आनंद के साथ, मोसुल में क्रूस पर आदमियों के जैसे ही वे गा रहें थे। उनकी शान्ति पर, चारों तरफ के माहौल का कोई असर ना था। इस्तानबुल में दो हफ्ते रहने के बाद मीडो ने अपना जीवन यीशु को सौंप दिया। वहां के लोगों का जीवन देखकर उसको यकीन हो गया कि परमेश्वर तक पहुंचने का रास्ता सिर्फ यीशु ही है। जो नया नियम को समीर ने उसे दिया था मानो खा लिया हो और परमेश्वर के वचन ने उसके मन को साफ किया। उसके मन में मृत्यु और क्लेश के बदले, जीवन और आशा के चित्र ने जगह ली।

मसीही बनने पर, मीडो के परिवार के लोगों ने उसे त्याग दिया। वह देख पाया कि इस्लामी राज्य, शैतान के हाथ में एक औजार है जो क्रूस के विरोधी इस्तेमाल कर रहे है। मीडो इराक इरबिल में वापस लौट आया जो कुर्दिस्थान इलाके में है। 'यीशु मुझे जीवन देता है,' उसने कहा, मुझे और कुछ नहीं चाहिए, सिवाय इसके कि जैसे प्रभु ने मुझे बचाया, मैं दूसरों को बताऊ - ISIS का एक पुराना सदस्य, ISIS जो दुनिया में दहरशत फैलाने वाला आतंकवादी समूह जिससे लोग डरते है।' कई लोगों ने सोचा कि वह एक बेवकूफ है जो इराक लौट आया है। 'मगर मैं जानता हूं कि मेरे देश में अंधकार छाया है, उसमें ज्योति बनकर रहना ही मेरा बुलावा है।' उसने कहा, 'मैं आप से यह पूछना चाहता हूँ: अपने लिए ज्योति बनकर रहने, यीशु आपको कहां बुला रहे है?'

मोसुल के कई ईसाइयों से मीडो ने मांफी मांगी थी। 'दुनिया में जात-पात और धार्मिक घृणा का हर एक के लिए 'यीशु' ही जवाब है।', उसने कहा। इरबिल में UN के तंबू में रह रहें कई मसीही शरणार्थियों ने अपने तंबू पर 'न' फुहारकर चित्रित किया है। मीडो ने इराक में अपने नये घर पर भी 'न' अब 'नासरत का' चिन्ह लिखा है और वह यीशु का गवाह भी बन गया है।

(टॉम डॉइल का स्टान्डिंग इन दा फायर (2017) देखे। जिस में नाम, स्थान और पहचान चिह्न बदल दी गयी है।)